मध्य-कालीन शिक्षा की विशेषताएं

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा का विकास क्रम छः सोपानों या क्रमों में विभक्त किया जा सकता है

१. पूर्व-वैदिक या ऋग्वेदिक युग (१५०० ईसा पूर्व से १००० ईसा पूर्व)

२. उत्तर-वैदिक युग (१००० ईसा पूर्व से ६०० ईसा पूर्व)

* ***उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा*** *की अवधि १४०० ईसा पूर्व से २०० ईसा पूर्व तक मानी जाती है जिसमें -:*

(क) उपनिषद काल- (१००० ईसा पूर्व से ६०० ईसा पूर्व)(यज्ञ सम्बन्धी ज्ञान का विकास) (पुरोहितवाद)

(ख) सूत्र-काल -(६०० ईसा पूर्व से २०० ईसा पूर्व)

*पाण्डेय,आर.के.(२००७).भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास

३. बौद्ध युग (५०० ई. पू. से १२०० ई. तक)

४.मुस्लिम युग (१२०० ई. से १७०० ई. तक)

५. आंग्ल युग (१७०० ई. से १९४७ ई. तक)

६. वर्तमान युग (१९४७ ई.से अब तक)

मध्य कालीन या मुसलिम- कालीन शिक्षा (११९२ ई.-१७०७ई.)

उदय के कारण

- भारत की समृद्धि की ओर विदेशी मुस्लिम शासकों की लालच भरी दृष्टि
- मुस्लिम शासकों के भारत पर आक्रमण
- राज्य विस्तार की लालसा
- मुस्लिम धर्म का प्रचार-प्रसार
- अरबी तथा फारसी भाषा का बढ़ावा
- इस्लामी संस्कृति का प्रचार

प्रमुख मुस्लिम शासक

- **गुलाम वंश-** कुतुबुद्दीन ऐबक,इल्तुतमिश, रज़िया, नसीरुद्दीन, बलबन आदि
- **खिलजी वंश-** ,जलाउद्दीन, अलाउद्दीन
- **तुगलक वंश-** गियासुद्दीन, मोहम्मद,फ़िरोज़
- **सैयद वंश (**
- **लोदी वंश-** बहलोल, सिकंदर
- **मुग़ल वंश-** बाबर,हुमांयू, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब

मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएं

- **शिक्षा के उद्देश्य :**

I. इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार

- शिक्षा धर्म से कट्टर रूप से जुडी हुई –धार्मिक प्रचार करना सबाब (पुण्य) का कार्य
- प्रत्येक शासक तथा उस्ताद का प्रमुख कर्तव्य है कि वह खुदा को खुश रखने के लिये इस्लाम का प्रचार करे

2. ज्ञान का प्रसार

- इस्लाम में शिक्षा को उच्च स्थान
- हज़रात मोहम्मद के अनुसार –शिक्षार्थी की कलम की स्याही का स्थान शहीद के खून से अधिक ऊँचा

3. लौकिक/भौतिक सुख की प्राप्ति

- पुनर्जन्म में विश्वास नहीं
- योनियों में विश्वास नहीं
- लौकिक सुखों, ऐश्वर्य, वैभव, धन, मदिरा तथा स्त्री को महत्व
- आध्यात्मिकता एक भ्रान्ति
- भविष्य की अपेक्षा वर्तमान महत्वपूर्ण
- जीवन में सुख एवं विलास की और आकर्षण

4.मुस्लिम शासन का दृढ़ीकरण

- हिन्दू शिक्षा के प्रभाव को कम करके मुस्लिम शिक्षा के प्रचार द्वारा मुस्लिम शासन की नींव मजबूत करना
- संपूर्ण भारतीयों का मुस्लिम धर्म से प्रभावित करना
- कूटनीति या बल द्वारा मुस्लिम धर्म को अपनाने पर जोर तथा अपनी सत्ता मजबूत करने का प्रयास

5.धर्म का संरक्षण

- इस्लामी कानूनों का प्रचार
- शरीयत के प्रति अटूट आस्था
- इस्लामी प्रथाओं का प्रचार

शिक्षा का संगठन

I. मकतबों का निर्माण

- प्रारम्भिक शिक्षा के केंद्र
- प्रत्येक मस्जिद के साथ एक-एक मकतब सम्बंधित
- मकतब अरबी भाषा के शब्द **'क़ुतुब'** से उत्पन्न, जिसका अर्थ है लिखना
- मकतब के शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य अक्षर ज्ञान के साथ धार्मिक शिक्षा
- बालकों के प्रवेश की **आयु ४ वर्ष, ४ महीने तथा ४ दिन**

- प्रथम रस्म बिस्मिल्लाह, जिसमें बालक को कुरान की कुछ आयतें दुहरानी होती थी, ऐसा न कर पाने पर 'बिस्मिल्लाह' शब्द का उच्चारण करा कर बालक को मकतब में प्रवेश
- शिक्षा की पद्धति अधिकांशतः **मौखिक**
- **लेखन कार्य** लकड़ी की **तख्ती** पर **सरकंडे** की **कलम** से
- लिपि **फारसी**

- रटंत प्रणाली
- प्रमुख उद्देश्य अक्षर-ज्ञान, उच्चारण, धार्मिक ग्रंथों, पैगम्बरों की शिक्षा प्रदान करना
- फारसी, व्याकरण , अंकगणित, पत्र-व्यवहार, गुलिस्तां, बोस्ता, इत्यादि की शिक्षा

2. मदरसों का निर्माण

- **उच्च शिक्षा** के केंद्र
- राजकीय मदरसों का **व्यय-भार राज्य पर**
- धार्मिक संस्थाएं तथा संपन्न जन द्वारा भी मदरसों की स्थापना
- सन्चालन प्रबंध-समितियों द्वारा
- विद्वान उस्तादों की व्यवस्था उस्तादों को निवास एवं भोजन मदरसों द्वारा
- कही-कही **छात्रावासों** की भी **व्यवस्था**
- मदरसे भी मस्जिदों से सम्बंधित
- कुरान के अध्ययन की विशेष व्यवस्था

- लौकिक एवं धार्मिक दोनों ही शिक्षा की व्यवस्था
- शिक्षा में जीवनोपयोगी कौशल जैसे गणित, ज्योतिष, यूनानी-चिकित्सा, इतिहास, भूगोल, कानून, कृषि, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, गृहशास्त्र, राजतन्त्र, अरबी-फारसी साहित्य,व्याकरण, खगोलशास्त्र इत्यादि शामिल
- कुछ मदरसे विशेष शिक्षा के लिए प्रसिद्ध जैसे दिल्ली कविता एवं संगीत के लिए तथा लाहौर गणित के लिए मशहूर
- अध्यापन की प्रमुख विधि भाषण
- शिक्षा निशुल्क तथा भोजन की व्यवस्था

परीक्षा प्रणाली

- मासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक परीक्षा की व्यवस्था नहीं
- अगली कक्षा में प्रवेश हेतु ना निश्चित अवधि ना ही निश्चित प्रावधान
- शिक्षक के संतोष के आधार पर अगली कक्षा में प्रवेश
- शिक्षा समाप्ति पर कोई प्रमाण पत्र नहीं
- विषय विशेष में दक्षता प्राप्त करने पर उपाधि देने का प्रावधान
- साहित्य में पारंगत होने पर काबिल, तर्क एवं दर्शन के ज्ञाता होने पर फ़ाज़िल तथा धर्म की विशेषज्ञता होने पर आलिम की उपाधि

अध्यापन विधि

- विषय वस्तु को कंठस्थ कराने पर बल
- मौखिक शिक्षण होने के कारण सम्प्रेषण हेतु भाषण विधि का प्रमुखता से उपयोग
- कक्षा- नायकीय प्रणाली का चलन
- मदरसों में शास्त्रार्थ का भी प्रचलन

- मकतब एवं मदरसों में अरबी एवं फारसी भाषा में शिक्षा
- सामान्य जन की भाषाओं की उपेक्षा
- राजकीय संरक्षण के कारण फारसी की ही प्रगति
- राजकीय सेवा के लिए फारसी आवश्यक होने के कारण कुछ हिन्दुओं द्वारा भी फारसी भाषा में अध्ययन किया जाने लगा

अनुशासन: दंड तथा पुरुस्कार

- कठोर अनुशासन
- मकतब एवं मदरसों में कठोर शारीरिक दंड जैसे लात, घूंसे मारना ,मुर्गा बनाना, बेंत मारना आदि
- प्रतिभाशाली बालकों को बादशाह तथा धनिकों द्वारा तमगे एवं पुरुस्कार
- शिक्षण व्यवस्था में अनुशासनहीनता एवं उद्दंडता के उदहारण नहीं

गुरु- शिष्य सम्बन्ध

- मधुर सम्बन्ध
- शिष्यों द्वारा उस्तादों का सम्मान तथा आदर
- शिष्यों द्वारा उस्तादों की सेवा-सुश्रुषा
- उस्तादों द्वारा भी शिष्यों के व्यक्तित्व विकास की चेष्टा

\

छात्रावास

- मकतब मस्जिद से जुड़े होने के कारण वहां स्थानीय क्षेत्र के बालक अध्ययन हेतु आते थे अतः मकतबों में छात्रावास की आवश्यकता न होने के कारण छात्रावास नहीं
- मदरसों में छात्रावास की सुविधा, जहाँ उच्च शिक्षा के लिए दूर-दूर से छात्रों का आगमन
- मदरसों का व्यय बड़े-बड़े राजा अथवा जागीरदारों द्वारा

- छात्रावास काफी बड़े, लगभग २००-४०० तक कमरे
- छात्रों के रहने तथा खाने की व्यवस्था नि:शुल्क
- भोजन पौष्टिक तथा स्वादिष्ट
- छात्रों के खेलकूद की भी व्यवस्था
- फिरोजशाही मदरसा भव्य,सुन्दर तथा रमणीक

अन्य: (अ) नारी शिक्षा

- कट्टर पर्दा प्रथा के कारण नारी शिक्षा का समुचित विकास नहीं
- छोटी उम्र की बालिकाओं की शिक्षा मकतबों में ही
- नैतिक शिक्षा में बोस्ता, तथा गुलिस्ता की शिक्षा
- उच्च परिवारों की स्त्रियों के लिए घर में ही शिक्षा की व्यवस्था
- राजकीय हरम में बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था राजदरबार द्वारा

- मुस्लिम युग की विदुषी महिलाओं में प्रमुख है-नूरजहाँ, रज़िया, जहाँआरा, मुमताजमहल, गुलबदन
- स्त्री शिक्षा के प्रमुख विषय –कुरान, धर्म, नीति , नृत्य , संगीत आदि
- नारी शिक्षा प्रमुख रूप से उच्च घरानों तक सीमित

(ब) सैनिक शिक्षा

- राजकुमारों को घुडसवारी, तीर- विद्या, भाला फेंकना, किला घेरना जैसी युद्ध कलाए सिखाई जाती थी
- सामान्य सैनिकों को भी तलवार भाला, ढाल आदि के प्रयोग की शिक्षा दी जाती थी
- युद्ध में जितने के लिए सैनिकों को प्रशिक्षित करना अनिवार्य मन जाता था
- युद्ध कला में पारंगत करने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिए जाते थे

(स) विविध कलाओं की शिक्षा

- व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष कारखानों तथा कार्यशालाओं में कारीगरों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को शिक्षा देना
- ललित तथा हस्त कलाओं जैसे नृत्य ,कला, संगीत, रेशम का काम, आभूषण निर्माण, जरी का काम, मलमल का काम, रथ निर्माण का काम इत्यादि कार्य चरम उत्कर्ष पर थे
- अधिकांश शासकों का विलासी स्वाभाव था अतः संगीत, नृत्य, तथा कला को विशेष महत्व दिया गया कला तथा संगीत इस समय अपने चरम उत्कर्ष पर था बैजू बावरा तथा तानसेन उस समय के प्रख्यात संगीतज्ञ हुए

- तत्कालीन शासकों को भवन निर्माण का भी शौक था अतः यह विद्या भी इस समय विकास की उत्कृष्ट अवस्था में थी कई शासकों ने शानदार इमारतों का निर्माण कराया जिनमे कुतुबमीनार, लालकिला, ताजमहल प्रमुख है ताजमहल आज भी अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्द है
- उच्च राजदरबारों ,शासकों तथा धनिकों द्वारा इन्हें प्रोत्साहन दिया जाता था

(द) साहित्य प्रगति

- मध्यकाल / मुस्लिम युग में राजकीय संरक्षण में साहित्य की उल्लेखनीय प्रगति हुई राज दरबार में प्रमुख कवि तथा साहित्यकारों को न केवल संरक्षण दिया जाता था बल्कि उनकी श्रेष्ठ रचनाओं पर पुरुस्कृत भी किया जाता था
- मुस्लिम शासकों का साहित्य के प्रति रुझान का एक प्रमुख कारण अपने धर्म का प्रचार करना तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना था |

- इस युग में फारसी, अरबी तथा उर्दू साहित्य की उन्नति हुई | फारसी राजकार्य की भाषा थी | कई हिन्दू जनों ने भी राज्य में उत्तम पद पाने के लिए फारसी भाषा सीखने के लिए आकर्षित हुए |
- इस युग के प्रमुख साहित्यकार है - आमिर खुसरो, अलबरूनी, गुलबदन बेगम,मीर हसन दहलवी प्रमुख है | कई शासको ने स्वयं रचनाएँ की है जैसे – बाबर द्वारा बाबरनामा , जहाँगीर द्वारा तुजके जहाँगीरी आदि

मध्यकालीन शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन: प्रमुख गुण

- निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा
  - ज्ञान प्राप्त करना धार्मिक कार्य तथा ज्ञान की बात करना या उसका प्रचार करना ईश्वर को प्रसन्न करना है
  - ईश्वर की उपासना करने के लिए इस्लाम में शिक्षा को महत्व दिया गया|
  - यही कारण है कि मकतब तथा मदरसों में शिक्षा निःशुल्क रखी गई
- शिक्षा का संरक्षण

- शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष पर बल
- साहित्य एवं इतिहास का विकास
- कक्षा नायकीय पद्धति
- कठोर दंड व्यवस्था के कारण अनुशासन
- गुरु-शिष्य मधुर सम्बन्ध
- विद्यार्थियों से व्यक्तिगत संपर्क

- **व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन**
- **कला कौशल की प्रगति**
- **विशिष्ठ उपाधियां प्रदान करना – *दर्शनशास्त्र एवं तर्कशास्त्र* के विद्यार्थियों को *फ़ाज़िल, धर्मशास्त्र* के विद्यार्थियों को *आलिम* तथा *साहित्य* के विद्यार्थियों को *क़ाबिल* की उपाधि दी जाती थी तथा विशिष्ठ योग्यता वाले विद्यार्थियों को विशेष प्रमाण पत्र दिए जाते थे**

- चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा (फारसी में)
- सभी शिक्षण संस्थाएं आर्थिक रूप से संपन्न
- निःशुल्क रहने, भोजन एवं पाठ्य सामग्री सभी छात्रों को उपलब्ध
- शिक्षा के प्रसार हेतु छात्रों को छात्रवृत्तियां देकर प्रोत्साहित करना
- हस्त कलाओं की शिक्षा

मध्यकालीन शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन:प्रमुख दोष

- **एकपक्षीय शिक्षा**
  - **भौतिक शिक्षाओं को अत्यधिक बल**
  - **सांसारिक सुखो की प्राप्ति प्रमुख लक्ष्य**
  - ***शिक्षा प्राप्त करने क प्रमुख उद्देश्य भौतिक सुख, एश्वर्य, मान तथा पद थे ****
- **अरबी तथा फारसी भाषाओँ का आधिपत्य : हिंदी तथा संस्कृत की उपेक्षा**

** चौबे, सरयू प्रसाद:भरतीय शिक्ष का इतिहास*

- स्त्री शिक्षा की उपेक्षा : मात्र धनी परिवारों की स्त्रियों को ही शिक्षा उपलब्ध
- शिक्षा को मुस्लिम धर्म से जोड देने से हिन्दुओं की शिक्षा की उपेक्षा
- शिक्षा मुस्लिम शासकों की कृपा पर निर्भर : शासकों के पतन के पश्चात् मदरसे प्रायः नवीन शासकों द्वारा उपेक्षित

- अमनोवैज्ञानिक शिक्षण :
  - लेखन एवं पाठन में साथ-साथ नहीं
  - पहले पाठन तथा बाद में लेखन, अतः दोनों में समन्वय नहीं
  - निर्दयतापूर्ण एवं अमनोवैज्ञानिक दंड व्यवस्था जो किसी यातना से कम नहीं
  - मानसिक योग्यताओं के विकास का अभाव:चिंतन, मनन, तर्क. कल्पना,संश्लेषण, विश्लेषण, मूल्यांकन, सृजन जैसी शक्तियों के विकास हेतु क्रियाओं को शिक्षण में स्थान नहीं, मात्र रटंत शिक्षण पद्धति पर बल
  - उपयुक्त शिक्षण विधियों का अभाव: प्रदर्शन, प्रयोग, योजना, निरीक्षण, शोध जैसी महत्वपूर्ण विधियों के स्थान पर व्याख्यान विधि का बहुतायत से प्रयोग
  -

- अध्यात्मिक पक्ष की अवहेलना :
  - बौद्धिक विकास एवं आत्मिक शुचिता हेतु कोई शैक्षिक क्रियाएं नहीं
  - प्रमुख लक्ष्य भौतिक सुख की प्राप्ति अतः शिक्षा में भी उन्ही क्रियाओं को अधिक महत्व
- प्रमुख लक्ष्य इस्लाम धर्म का प्रचार अतः प्राथमिक स्तर से ही छात्रों को कुरान की आयतें कंठस्थ करायी जाती थी

- जनसामान्य की शिक्षा का अभाव
  - मुस्लिमकालीन शिक्षा में जन सामान्य के लिए लिए कोई शिक्षा व्यवस्था नहीं थी
  - मात्र बड़े बड़े नगरों में ही शासकों द्वारा या धनिक वर्गों द्वारा इस्लाम धर्म के प्रचार हेतु तथा स्वयं के यश प्राप्त करने हेतु मकतब एवं मदरसे चलाये गए| इनमे से अधिकांश मदरसे प्रायः उन शासकों या हस्तियों के मिट जाने के बाद समाप्त हो जाया करते थे
- शिक्षा प्रायः उच्च वर्ग तक ही सीमित, सामान्य जन उपेक्षित

- बड़े बड़े नगरों में ही शिक्षा केंद्र स्थापित
- शिक्षार्थियों का विलासितापूर्ण जीवन जीना, संयम तथा नैतिक मूल्यों को महत्व नहीं
- शिक्षा व्यवस्था पर शासन का प्रभाव :
  - शासन सत्ता बदलने पर शैक्षिक व्यवस्थाएं प्रभावित
  - सत्ता बदलने पर पूर्व शैक्षिक व्यवस्थाएं बदल जाती थी
- सामान्य जनता को अध्ययन में भाषा सम्बन्धी कठिनाई क्योंकि शिक्षा का माध्यम मात्र अरबी एवं फारसी भाषाएँ

मध्यकालीन शिक्षा का योगदान

- साहित्य उन्नति
- ललित कलाओं का विकास
- कक्षा नायक पद्धति
- व्यावसायिक एवं प्राविधिक शिक्षा
- छात्रावासों में निःशुल्क व्यवस्था
- अरबी तथा फारसी भाषाओँ का विकास
- धर्म(कलमा,नमाज रोज़ा,जकात,हज) के द्वारा मूल्य शिक्षा देने का प्रयास
- चिकित्सा पद्धति का विकास

सन्दर्भ :

- https://www.intechopen.com/chapters/73290#:~:text=During%20ancient%20education%2C%20there%20were,and%20leaders%20of%20the%20future.
- http://www.vkmaheshwari.com/WP/?p=512
- https://sanelywritten.com/2020/09/08/education-system-in-medieval-india/
- https://www.yourarticlelibrary.com/education/islamic-education-during-medieval-india/84833